लीक से हटकर प्रवासी हिंदी कथा साहित्य में यौनिक भावनाओं की अभिव्यक्ति

नीरजा वी. एस.

विभागाध्यक्षा एवं सहायक आचार्या, हिंदी विभाग, सरकारी कॉलेज, कोड़नचेरी, कालिकट, केरल.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18790803

ABSTRACT:

गतिशीलता मनुष्य की एक जन्मजात प्रवृत्ति है। मनुष्य की गतिशीलता प्रवासन का रूप और मार्ग निर्धारित करती है। मनुष्य में अपनी सीमाओं को लांघने की जो क्षमता है, वह उनकी इच्छाशक्ति का प्रतिनिधित्व करती है। ऐतिहासिक तौर पर देखें तो प्रवासन का संबंध धर्म से था, मतलब मोक्ष प्राप्ति, धर्म प्रचलन एवं ईश्वर साक्षात्कार से था। इसके अलावा व्यापारिक एवं वाणिज्यिक प्रवासन भी प्रचलित थे। आज वैश्वीकरण के संदर्भ में विश्व एक 'विश्वग्राम' में परिवर्तित हो चुका है। वैश्वीकरण ने नए जीवन मूल्यों को जन्म दिया है, इसलिए प्रवासी भारतीय भी वैश्विक भारत को नए संदर्भ के साथ खोजना और समझना चाहते हैं। लेकिन सच्ची बात यह है कि प्रवासन के बाद प्रवासी मानव भावनात्मक स्तर पर अपनी जड़ों से जुड़ना चाहते हैं। प्रवासन एक एहसास है, प्रक्रिया है और मनोभाव भी है। इक्कीसवीं सदी की हिंदी कथा साहित्य में अनेक प्रकार की वैचारिकताएँ एक साथ चलती हैं, कई विमर्श भी प्रचलित हैं जैसे नारी विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर विमर्श, पारिस्थितिक विमर्श, प्रवासी विमर्श, मुस्लिम विमर्श, बाल विमर्श, वृद्ध विमर्श आदि। इन विमर्शों ने हिंदी कथा साहित्य को हथियार के रूप में इस्तेमाल किया है। वर्तमान जीवन के विविध आयामी विषयों को समकालीन प्रवासी हिंदी कथा साहित्य अपने विषय क्षेत्र में लेती है, जैसे पराए देश में पराए होने की स्थिति, अपरिचित परिवेश में समायोजन के प्रयास आदि। नॉस्टैल्जिया को प्रवासी साहित्य का आधार माना जाता था। प्रवासी साहित्य सिर्फ नॉस्टैल्जिक साहित्य मात्र नहीं। प्रवासी लेखन के द्वारा भारत के लोग अन्य देशों की संस्कृति एवं यथार्थ से परिचय प्राप्त कर सकते हैं और भारत की संस्कृति एवं जीवन मूल्यों से विदेशी पाठक भी परिचय प्राप्त कर सकते हैं।

KEYWORDS:

प्रवासन, प्रवासी हिंदी कथा साहित्य, पाश्चात्य संस्कृति, विषय विविधता, अस्मिता बोध, यौनिकता।

भूमिका:

आज हिंदी साहित्य के सच्चे रूप में वैश्वीकरण का श्रेय प्रवासी साहित्यकारों को जाता है। मानवीय संवेदनाओं की देश-काल की मर्यादा नहीं होती, तो भी हम उनके साहित्य को पढ़कर विदेश के अनेक अनुभव, भावनाओं और संवेदनाओं से जुड़ सकते हैं। प्रवासी हिंदी साहित्य विदेश में बसे भारतीय मूल के लेखकों द्वारा हिंदी में लिखा गया साहित्य है। प्रवासी लेखन के मन में अपने देश, संस्कृति एवं मूल्य के प्रति जुड़ाव है। प्रवासी हिंदी साहित्य, खासकर कथा साहित्य, हिंदी भाषा के वैश्विक स्तर पर हो रहे विकास एवं विस्तार को समझने की एक दृष्टि भी विकसित करते हैं। इस साहित्य में कई कारणवश भारत से, अपनी संस्कृति, भाषा एवं समाज से कटकर जीविका के लिए विदेश में संघर्ष करते भारतीय लोगों की मनोदशा एवं पीड़ा को अभिव्यक्त करती है। अपने देश से दूर रहते इन भारतीयों के लेखन का उद्देश्य अपनी भाषा का विकास भी है। इन लोगों ने विदेशों में रहकर हिंदी भाषा और साहित्य के विकास एवं विश्व स्तर पर नई पहचान स्थापित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है। हिंदी साहित्य में प्रवासी हिंदी साहित्य को अलग विधा के रूप में माना जाता है। लेकिन प्रवासी लेखक अपने आपको साहित्यकार ही कहलाना चाहते हैं, न कि प्रवासी साहित्यकार। वे हिंदी साहित्य को नए विषय-वस्तु, नए मुहावरे, नई शैली एवं नई शब्दावली के साथ ईमानदारी के साथ पश्चिमी जगत के यथार्थ परिवेश से भी जोड़ रहे हैं। इन सबों का योगदान हिंदी कथा साहित्य की श्रीवृद्धि में सहायक है। प्रवासी हिंदी लेखक अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद आदि स्थानों को अपनी कर्मभूमि स्वीकार कर साहित्य लेखन करते आ रहे हैं। अनिल जोशी की किताब 'प्रवासी लेखन नई जमीन नया आसमान' में प्रवासी साहित्य पर किया गया मंतव्य यहां उल्लेखनीय लगता है-

"भारतीय साहित्य में प्रवासी साहित्य को सही जगह मिलनी आवश्यक है जिससे हमें दूर देश में बसे भारतीय लोगों के संघर्ष, दुख-सुख, आशा-निराशा, अवसाद, उत्साह व उनकी मनोवैज्ञानिक भूमिकाओं की जानकारी मिल सके। हम ग्लोबल भारतीयों को, उनके मन को, उनकी संवेदनाओं को और भारत के बाहर भारतीयों के रचनात्मक इतिहास को जान सकें।"

भारतीय संस्कृति में यौनिकता की बातों को नैतिकता की चादर ओढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता था। 21वीं शताब्दी की यह महत्वपूर्ण

उपलब्धि है कि यौनिकता जो पहले बहुत ही निजी था, अब बहस का मुद्दा बन गया है। यौनिकता मनुष्य के जीवन का एक पहलू है जो उसकी यौन भावनाओं और अनुभवों को दर्शाता है। तारसप्तक की भूमिका में अज्ञेय लिखते हैं- "आधुनिक युग का साधारण मनुष्य यौन वर्जनाओं का पुंज है... आज के मानव का मन यौन परिकल्पनाओं से लदा हुआ है, और वह कल्पनायें दमित हैं, कुंठित हैं।"

कनाडा के प्रसिद्ध लेखक सुमन कुमार घई की कहानी 'स्वीट डिश' में बहू सास की मृत्यु होने के बाद अपने ससुर विजय को डेट पर जाने के लिए ज़ोर देती है। विजय कहता है, इस आयु में एक अकेले इंसान की भावनाओं को इस उम्र का इंसान ही समझ सकता है और हमारा समाज और संस्कृति तो इस ओर देखना ही नहीं चाहती। लेकिन बच्चों के प्रोत्साहन से वह अपना जीवन नए तरीके से जीने का निर्णय लेता है। उसे अपनी पत्नी की सहेली जो अकेली है, उससे एक पार्टी में मुलाकात होती है, दोनों पार्टी के बाद वापस एक ही गाड़ी में सवारी करते हैं और गाड़ी से उतरते वक्त होंठों में वह चुम्बन देकर चली जाती है। इस कहानी में बहू और बेटे भी अपने पिता के पार्टनर के रूप में उनकी माँ की सहेली के आने को बुरा नहीं मानते हैं। कनाडा लेखिका स्नेह ठाकुर की कहानी 'पहली डेट' में एक बेटी माता-पिता के तलाक के बाद मां को नए व्यक्ति के साथ डेट पर जाने के लिए अपने हाथों से उन्हें तैयार करती है। विदेश में बच्चे ही अपने मां-बाप को उनकी मर्जी के अनुसार यौन जीवन जीने की आजादी देते हैं। एक लेखक का सबसे बड़ा गुण संवेदनशीलता है, चाहे वह किसी भी देश का हो या प्रवासी हो, दूसरों के सुख-दुख को अनुभूत करने की क्षमता और संप्रेषणीयता उनके लिए अनिवार्य है। प्रवासी लेखक संवेदनशील भी हैं और खुलकर लिखने की क्षमता उनमें है। भारतीय कहानी साहित्य में वृद्धों की यौन स्वतंत्रता को लेकर इस प्रकार की कहानी नगण्य है। प्रवासी कहानी यौन जीवन के महत्व को समझने का प्रयास करती है और साथ ही साथ समाज की खाल को उतारकर जीवनसाथी के अभाव में व्यक्ति के बचे हुए यौन जीवन के अन्वेषण हेतु प्रोत्साहन देती है।

समलैंगिक हमारे समाज का एक ऐसा उपेक्षित वर्ग है, जो समाज की पारंपरिक मानसिकता से पीड़ित है। भारत में कई पौराणिक ग्रंथों में समलैंगिकता का उल्लेख हुआ है। समलैंगिक संबंध और समलैंगिक लोगों को सबसे पहले स्वीकृति डेनमार्क में मिली। प्रवासी कहानियों में जहां समलैंगिकता की बात आती है वहां एक विशेष प्रकार की लैंगिक

आत्मनिर्भरता दिखाई देती है। तेजेंद्र शर्मा द्वारा रचित 'होमलेस' कहानी की स्टेला और एंजेला जो समलैंगिक औरतें यानी लेस्बियन हैं। स्टेला पति के हिंसात्मक व्यवहार से पीड़ित है और एंजेला परिवार से उपेक्षित होने के कारण अकेली है। दोनों एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होती हैं। अपने संबंध को लेकर एंजेला कहती है- "हमें आज पता चला है कि अपनी खुशी के लिए हमें किसी आदमी की जरूरत नहीं है हम दोनों अपने आप में संपूर्ण हैं।" इस कहानी में स्टेला और एंजेला जीवन में पुरुष के न होने से खुश हैं।

डेनमार्क की लेखिका अर्चना पैन्यूली के उपन्यास 'पॉल की तीर्थयात्रा' की जोहाना नामक पात्र मां के तलाक, पुनर्विवाह, बॉयफ्रेंड और इन सब से मिली असीम वेदना के कारण पुरुष से घृणा करने को बाध्य होती हैं। जोहाना के मन में यह सोच है कि तीन पुरुषों में से कोई भी उसकी मां को समझ नहीं पाया। इसलिए जोहाना लेस्बियन व्यक्ति की ओर झुकने लगती है। जोहाना सोचती हैं कि एक लड़की ही लड़की की भावनाओं को समझ सकती है। पति-पत्नी का संबंध झूठा है। वह लेस्बियन बनना पसंद करती है, इसलिए वह एक लड़की को ही अपनी संगिनी बना लेती है।

अर्चना जी की 'कैरली मसाज पार्लर' में मार्क और नानसी नामक पति-पत्नी जो घर खरीदते हैं उसके ऊपर के मंजिल पर कॉल और एल्फ नाम के दो आदमी रहते हैं। दोनों पढ़े-लिखे और उच्च पदस्थ अधिकारी हैं। कॉल एल्फ का परिचय नानसी से अपने पति के रूप में करता है। नानसी दो लंबे-तगड़े पुरुषों को पति-पत्नी के रूप में देखकर आश्चर्यचकित हो जाती है। कॉल की अदाएं लड़कियों की तरह हैं और दाढ़ी-मूंछों वाला कॉल नारी की तरह सजते-संवरते हैं। कॉल पत्नी की भूमिका निभाता है और एल्फ पति का। वे दोनों पति-पत्नी की तरह खरीदारी के लिए जाते हैं, नाखूनों पर नेलपॉलिश लगाते हैं और अपने-अपने प्रिय पुरुषों के विषय में गपशप करते हैं। आज बहुत से देशों में समलैंगिक विवाह वैध है इसमें कनाडा, यूके का नाम भी है। ब्रिटेन के अरुणा सब्बरवाल की कहानी 'क्लब क्रॉलिंग' में रॉबर्ट नामक पात्र समलैंगिक या 'गे' है। वह अपने जीवन में लड़की की जरूरत महसूस नहीं करता। इस कहानी के चार पात्र कर्ण, एश, जस्सी और थॉमस बचपन के दोस्त हैं। जब वे बड़े हो जाते हैं एक दिन क्लब क्रॉलिंग के दौरान 'गे क्लब' जाते हैं तब उन्हें पता चलता है कि उनमें से थॉमस समलैंगिक है। इस पर दोस्तों की प्रतिक्रिया घृणात्मक नहीं होती। संवेदनशीलता दिखाते हुए जस्सी कहता

है- "थॉमस मेरा तो दिल तेरे लिए रोता है। मैं तो नृत्य मुखौटा चढ़ाकर थोड़ी देर में दुखी हो जाता हूं और तू चौबीस घंटे मुखौटा चढ़ाकर कब तक जिएगा ये दोहरा जीवन।" इन कहानियों में समलैंगिकता को सिर्फ एक विकार या पश्चिमी बुराई के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय प्रेम के एक रूप के तौर पर दिखाया जाता है, जो हिंदी साहित्य में एक बड़ा बदलाव है।

प्रवासी लेखक माँ की ममता और पत्नी की पवित्रता संबंधी परंपरागत अवधारणाएं तोड़ देते हैं। ब्रिटेन के हिंदी लेखक तेजेंद्र शर्मा की कहानी 'इंतजाम' में एक माँ अपनी बेटी के यौन सुख का प्रबंध खुद करती है। इसमें एक माँ यौन संतुष्टि के लिए अपने से छोटी उम्र का साथी ढूंढ लेती है। तब वह अपनी बेटी एलिसन को भी इसी स्थिति से गुजरने देखती है तो उसे अपने साथी से संतुष्ट करवाने का निर्णय लेती है, ताकि वह भी अपनी माँ की तरह यौन सुख ले सके। उनकी एक दूसरी कहानी 'कल फिर आना' में एक रेप का चित्रण है जो एक स्त्री के लिए यौन सुख में बदल जाता है। इस कहानी की नायिका रीमा के पति कबीर को सेक्स में ज़रा भी रुचि नहीं थी। उनके लिए सेक्स बच्चा पैदा करने का एक माध्यम मात्र था। "देखो रीमा, मैं पचास का हो चला हूँ। मेरे लिए अब औरत के जिस्म का कोई मतलब नहीं रह गया... अब तुम मुझसे कोई उम्मीद न रखना।" लेकिन रीमा सेक्स के लिए तड़पती थी। पति-पत्नी के बीच सालों से शारीरिक संबंध नहीं है। जब एक दिन रीमा घर में अकेली थी तब एक चोर द्वारा उन पर बलात्कार होता है। लेकिन रीमा को यौन सुखानुभव होता है। जो संबंध बलात्कार के रूप में शुरू किया था वह बाद में स्वेच्छा में बदल जाता है। रेप के बाद रीमा चोर से कल फिर आने का निमंत्रण देती है।

अमेरिका की हिंदी लेखिका अनिल प्रभा कुमार की कहानी 'घर' की नायिका नादिरा अपने नाम की तरह असाधारण है। दो बच्चों की माँ होने के बाद भी उनमें सेक्स के प्रति आकर्षण कम नहीं हुआ। नादिरा के व्यक्तित्व में कुछ ऐसी स्वच्छंदता थी कि न वह पारंपरिक पत्नी के चौखटे में ठीक से उतरती थी और न ही माँ के। वह अपने बेटे के साथी के पिता से भी यौन संबंध रखती है। वह कई पुरुषों के साथ विवाहेत्तर प्रेम और संभोग भी करती है। वह शादीशुदा होते हुए भी महेश नामक एक व्यक्ति के साथ लिव-इन रिलेशनशिप में रहती है। वे स्वेच्छाचार की हदें लांघती हैं क्योंकि उनकी यौन स्वतंत्रता उनके लिए माँ और पत्नी की परंपरागत भूमिका से ऊपर है। अभी तक जिस विषय पर खूब चर्चा नहीं हुई है उस

पर विचार करना लेखक का उद्देश्य है। सेक्स न पाने पर नारी मन की विवशताओं का चित्रण अभी तक भारतीय लेखकों द्वारा अछूता रह गया है। प्रवासी कथा साहित्य में यौनिकता के प्रति पश्चिमी समाज का उदार व्यवहार देखने को मिलता है।

निष्कर्ष:

उपर्युक्त कहानियों के विवेचन से यह बात समझ में आती है कि ये रचनाएँ जेंडर से जुड़े स्टीरियोटाइप को तोड़ते हैं। यौनिकता मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। भारतीय संस्कृति एवं समाज में यौनिकता के बारे में खुलकर बात नहीं करते। लेकिन प्रवासी लेखक समलैंगिकता, बुजुर्गों के सेक्स संबंधी मान्यताएं, नारी की शारीरिक चाहत आदि पर खुलकर बात करते हैं क्योंकि वे जिस समाज में जी रहे हैं ये सब चीजें वहाँ प्राकृतिक हैं। प्रवासी साहित्य की सबसे बड़ी बात यह है कि महिला साहित्यकारों की भागीदारी पुरुष साहित्यकार से अधिक है। साथ ही साथ अपनी विषय विविधता के कारण मुख्यधारा में सम्मिलित भी है। उनकी रचनाओं का विषय सिर्फ नॉस्टैल्जिया तक सीमित नहीं है। साहित्य में यौनिकता के चित्रण में स्त्रियां भी खुलकर हिस्सा ले रही हैं। उपर्युक्त रचनाओं में यौन अनुभवों को अभिव्यक्त करने के लिए नई भाषा और बिंबों का प्रयोग किया है, जो सामाजिक नैतिकता के दायरे को चुनौती देता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. अनिल जोशी, प्रवासी लेखन नई जमीन नया आसमान, वाणी प्रकाशन, 2018, पृ. 282
2. अज्ञेय, तारसप्तक, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1946, पृ. 223
3. तेजेंद्र शर्मा, होमलेस, दीवार में रास्ता, वाणी प्रकाशन 2012, पृ. 106
4. अरुणा सब्बरवाल, क्लब क्रॉलिंग, सुलगते सवाल, प्रलेक प्रकाशन 2021, पृ. 92
5. तेजेंद्र शर्मा, कल फिर आना, https://www.rachanakar.org/2012/10/blog-post_4755.html (19th January 2026)